भारवि की शैली - क्रमशः

(नानाननाः) हे नाना प्रकार के मुख वाले शिव सैनिकों, (ऊननुन्नः ना न) निकृष्ट के द्वारा घायल किया गया व्यक्ति वीर पुरुष नहीं है। (नुन्नोनः ना अना ननु) निकृष्ट को घायल करने वाला व्यक्ति भी वस्तुतः वीर पुरुष नही है। (ननुन्नेनः नुन्नः अनुन्नः) जिसका स्वामी अक्षत है, ऐसा क्षत व्यक्ति भी वस्तुतः अक्षत ही है। (नुन्ननुन्ननुत् न अनेनाः) अत्यधिक घायल को क्षति पहुंचाने वाला व्यक्ति भी निर्दोष नहीं होता।

चित्रालंकार का एक उदाहरण गोमूत्रिकाबन्ध है। इसमें प्रत्येक चरण में विषम वर्गों पर वर्ण-परिवर्तन हो सकता है। यह निम्नलिखित ढंग से पड़ा जा सकता है।

ना सु रो यं न वा ना गो ध र सं स्थो न रा क्ष सः ।
ना सु खो यं न वा भो गो ध र णि स्थो हि रा ज सः॥ (१५-२२)

स्कन्द अपनी भागती हई सेना को समझाते हुए कहते हैं कि मुनिवेशधारी अर्जुन न दैत्य है, न नागराज (गजेन्द्र या सर्पराज) है, न पर्वताकार राक्षस ही है, अपितु सुखद, महोत्साही, रजोगुण-प्रधान एवं भूतलचारी एक मनुष्य है।

इसी प्रकार चित्रालंकार का एक अत्यन्त श्रम-साध्य भेद सर्वतोभद्र है। इसे सीधा, उल्टा, ऊपर या नीचे जिस प्रकार भी पढ़ा जाएगा, वही पद बनता है।

देवाकानिनि कावादे वाहिकास्वस्वकाहि वा।
काकारेभभरे काका निस्वभव्यव्यभस्वनि ॥ (१५-२५)

शिव की भागती हुई सेना के प्रति सेनापति स्कन्द का कथन कि आप लोग कायरता दिखाकर हमारे गौरव को नष्ट न कीजिए। (काकाः) हे काक-तुल्य कापुरूषो? इस युद्ध में जो कि (देवाकानिनि) देवों के लिए उत्साहप्रद है, (कावादे) वाग्युद्ध-प्रधान है, (वाहिकास्वस्वकाहि वा) क्रमशः नेतृत्व के समय शत्रुओं पर सम्यक्तया प्रहरणशील है, (काकारेभभरे) मदस्रावी हस्ति-समूह से युक्त है और जो (निस्वभव्यव्यभस्वनि) निर्बल तथा सबल दोनों के पराक्रम से सुशोभित है, (अपना पुरुषार्थ न छोड़िए) ।

'चित्रालंकार का एक सुन्दर उदाहरण निम्नलिखित श्लोक है। इसमें पूर्वार्ध और

उत्तरार्ध समान हैं। शिव और अर्जुन दोनों के बाणों की समान शब्दावली में प्रशंसा है।

घनं विदार्यार्जुनबाणपूगं ससारवाणोऽयुगलोचनस्य ।
घनं विदार्यार्जुनबाणपूगं ससार बाणो युगलोचनस्य ॥ (१५-५०)

इधर त्रिलोचन शिव का शक्ति और ध्वनियुक्त बाण अर्जुन के घने बाण-समूह को छिन्न-भिन्न करता हुआ व्याप्त हुआ, उधर द्विलोचन अर्जुन का बाण घने अर्जुन वृक्ष, बाण वृक्ष और सुपारी के वन को फाड़ता हुआ व्याप्त हुआ।

भारवि ने निम्नलिखित श्लोक में महायमक का प्रयोग किया है। इसके चारों पद समान हैं, परन्तु पृथक् चार अर्थ निकलते हैं। यह भारवि की विशेष योग्यता का परिचायक है:

विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा: ।
विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा: ॥ (१५-५२)

इसके चार अर्थ इस प्रकार हैं:-

(१) (जगतीश-मार्गणाः विकाशम् ईयु:) पृथ्वीपति अर्जुन के बाण विस्तार को प्राप्त हुए।

(२) (जगति ईशमार्गणाः विकाशम् ईयुः) संसार में शिव के बाण वि-काश (विच्छेद) को प्राप्त हुए।

(३) (जगती-श-मार्-गणाः विकाशम् ईयुः) संसार को दुःख देने वाले राक्षसों को मारने वाले शिव के गण (अर्जुन के पराक्रम से) प्रफुल्लित हुए।

(४) (जगतीशमार्गणाः वि-काशम् ईयु:) जगती के ईश शिव के अन्वेषक देव आदि पक्षियों की गति के स्थान आकाश को प्राप्त हुए।

उपमा-

यद्यपि भारवि में कालिदास के तुल्य उपमानों का बाहुल्य नहीं है, तथापि उपमा-प्रयोगों में सौन्दर्य, स्वारस्य, सरसता, पाण्डित्य और औचित्य का सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। युधिष्ठिर का क्या ही सुन्दर कथन है कि मनुष्य जब

किंकर्तव्यविमूढ़ होता है तो आगम उसका मार्ग-निर्देश करता है, जैसे अन्धकार में दीपक।

मतिभेदस्तमस्तिरोहिते गहने कृत्यविधौ विवेकिनाम् ।

सुकृतः परिशुद्ध आगमः कुरुते दीप इवार्थदर्शनम् ॥ (२-३३)

यह दार्शनिक उपमा का सुन्दर उदाहरण है। एक वैयाकरणी उपमा का भी रसास्वाद करें। शिव और अर्जुन के बीच में मरने के लिए उपस्थित वराह की उपमा प्रकृति और प्रत्यय के बीच में विद्यमान अनुबन्ध (इतसंज्ञक क, आदि, जैसे क्त और क्तिन् में क् अनुबन्ध) से दी गई है।

स भवस्य भवक्षयैकहेतोः सितसप्तेश्च विधास्यतोः सहार्थम् ।

रिपुराप पराभवाय मध्यं प्रकृतिप्रत्यययोरिवानुबन्धः ॥ (१३-१९)

सर्ग १३ और १७ में प्रायः पूरे सर्ग में उपमा अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

अन्य अलंकार –

भारवि ने उपमा के अतिरिक्त उत्प्रेक्षा', रूपक, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास' और श्लेष अलंकारों का अनेक स्थलों पर प्रयोग है। इनके अतिरिक्त एकावली (२-३२), समासोक्ति (२-३६, ३-६०, ५-२७), दृष्टान्त (२-५१, १५-१५), अर्थापत्ति (७-२७), विरोधाभास (१८-४१) आदि अलंकारों का भी प्रयोग किया है।

(ङ) भारवेरर्थगौरवम्

भारवि का वैदुष्य व्यापक है। उसने जीवन की ऊँच-नीच सभी अवस्थाओं का वैयक्तिक अनुभव प्राप्त किया था। अतएव उसके सैकड़ों सुभाषितों में वेद, दर्शन, नीति, राजनीति, पुराण, ज्योतिष, कामशास्त्र, कृषि, काव्य-शास्त्र, अलंकारशास्त्र एव नाटयशास्त्र आदि का अगाध पाण्डित्य मिलता है। यहाँ पर उदाहरण रूप में कुछ अर्थगौरव वाले पद प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ये सभी अर्थान्तरन्यास के उदाहरण हैं।

भारवि का नीतिशास्त्रीय ज्ञान बहुत व्यापक था। जैसे-

(१) असाधुयोगा हि जयान्तरायाः प्रमाथिनीनां विपदां पदानि (३-१४)- असज्जनों की संगति पराभव और विपत्ति का कारण है।

(२) मात्सर्यरागोपहतात्मनां हि स्खलन्ति साधुष्वपि मानसानि (३-५३) - ईर्ष्यालु व्यक्ति सज्जनों से भी द्वेष करने में नहीं चूकते।

(३) किमिवावसादकरमात्मवताम् (६-१९) मनस्वियों के लिए क्या दुःख क्या सुख?

(४) वस्तुमिच्छति निरापदि सर्वः (९-१६)- सभी निर्विघ्न स्थान पर रहना चाहते हैं।

(५) न्यायाधारा हि साधवः (११-३०) – सज्जन न्याय-मार्ग का ही आश्रय लेते हैं।

(६) जन्मिनो मानहीनस्य तृणस्य च समा गतिः (११-५९)-स्वाभिमान-रहित व्यक्ति और तिनके की समान अवस्था होती है।

(७) आपदेत्युभयलोकदूषणी वर्तमानमपथे हि दुर्मतिम् (१३-६४) - कुमार्गगामी मूर्ख पर सभी ओर से विपत्तियां पाती हैं।

(८) तेजोविहीनं विजहाति दर्पः शान्तार्चिषं दीपमिव प्रकाशः (१७-१६) निस्तेज व्यक्ति में स्वाभिमान इसी प्रकार नहीं रहता है, जैसे बुझे हुए दीपक में प्रकाश।

राजनीति-विषयक कुछ सुभाषित ये हैं :-

(१) ब्रजन्ति ते मूढधियः पराभव भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः (१-३०)-दुष्ट के साथ दुष्टता ही उचित है।

(२) प्रकर्षतन्त्रा हि रणे जयश्रीः (३-१७) युद्ध में पराक्रम पर विजय निर्भर है।

(३) परमं लाभमरातिभङ्गमाहुः (१३-१२)-शत्रु-नाश सबसे बड़ा लाभ है।

(४) नयहीनादपरज्यते जनः (२-४९)-नीतिहीन राजा से प्रजा प्रसन्न नहीं रहती।

(५) सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः (१-५) राजा और मन्त्री के अनुकूल होने पर ही सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

(६) व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः (१-४२)-शत्रुओं की उपेक्षा करके मुनि ही शान्ति लाभ कर सकते हैं, राजा नहीं।

कुछ अन्य सुन्दर सुभाषित ये हैं :-

(१) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः (१-४)

(२) समुन्नयन् भूतिमनार्यसंगमाद् वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (१-८) नीचों की संगति की अपेक्षा महात्माओं से विरोध भी अच्छा है, क्योंकि वह ऐश्वर्य का साधक है।

(३) अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता (१-२३)-बलवान् से विरोध दुःखदायी है।

(४) वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि (८-३७)-प्रेम में गुण बसते हैं, न कि वस्तु में।

(५) मित्र-लाभमनु लाभसम्पदः (१३-५२) सबसे बड़ा लाभ मित्र-लाभ है।

(६) विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्येव हितषिणं रिपुं वा (१३-६)

(७) अविज्ञातेऽपि बन्धौ हि बलात् प्रह्लादते मनः (११-८)

(८) आपातरम्या विषयाः पर्यन्तपरितापिनः (११-१२)

(९) कामाः कष्टा हि शत्रवः (११-३५)

(१०) सुलमा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् (११-११)

(११) गुरुतां नयन्ति हि गुणा न संहति (१२-१०)

(१२) पुरुषस्तावदेवासौ यावन्मानान्न हीयते (११-६१)

क्रमशः----------